NEERAJ®

M.S.O.E.-4

नगरीय समाजशास्त्र

(Urban Sociology)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Dr. V.B. Singh, **M.A. (Sociology, Pol. Science, LL.B.), Ph.D.**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 400/-

Content

नगरीय समाजशास्त्र
(Urban Sociology)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2023 (Solved) 1-3
Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

अवधारणाएँ (Concepts)

1. नगरीय समाजशास्त्र क्या है? (What is Urban Sociology?) 1

2. नगरीय केन्द्र, नगरीकरण और नगरीय वृद्धि 11
(Urban Centres, Urbanisation and Urban Increase)

3. नगर और महानगर (City and Metropolis) 18

4. ग्रामीण-नगरीय सातत्यक (Rural-Urban Continuity) 26

नगरीय पारिस्थितिक प्रक्रियाएँ और सिद्धान्त (Urban Circumstantial Procedures and Principles)

5. आक्रमण, अनुक्रम, संकेन्द्रण, केन्द्रीयकरण और पृथक्करण 30
(Aggression, Succession, Concentration, Centralisation and Separation)

6. नगरीय वृद्धि के मॉडल : संकेन्द्रित अंचल, क्षेत्रक, बहुविध केन्द्र : शोषणात्मक और प्रतीकात्मक 38
(Models of Urban Increase: Concentric Zone, Multiple Nuclei Model: Exploitative and Symbolical)

7. सामाजिक क्षेत्र विश्लेषण और हाल की प्रगति 46
(Social Field Analysis and Recent Progress)

भारतीय नगरीय संरचना का विकास (Growth of Indian Urban Strucute)

8. प्राचीन, मध्यकालीन और औपनिवेशिक नगर : केस अध्ययन 51
(Ancient, Mediloal and Colonial City : Case Study)

9. नगरों के प्रारूप (Forms/Types of Cities) 59

10. प्राचीन, आधुनिक, पूर्व औद्योगिक और औद्योगिक नगरों का कालिक विकास 69
(Cronological Development of Ancient, Modern, Pre-Industrial and Industrial Cities)

11. नगरों का प्रकार्यात्मक वर्गीकरण : वाणिज्यिक, प्रशासनिक और तीर्थस्थल नगर 79
(Functional Classification of Cities: Commercial, Administrative and Pilgrimage Centre Cities)

12. नगरीकरण की प्रकृति और पैटर्न (Nature and Pattern of Urbanisation) 87

भारत में नगरीय समाजशास्त्र (Urban Sociology in India)

13. नगरीय समाजशास्त्र का विकास (Growth of Urban Sociology) 97

14. भारत में नगरीय समाजशास्त्र 114
(Urban Sociology in India)

नगरीकरण और उसका प्रभाव (Urbanisation and its Effect)

15. स्तर, प्रवृत्तियाँ और पैटर्न (Standard, Tendencies and Patterns) 130

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
16.	विवाह, परिवार और नातेदारी (Marriage, Family and Kinship)	139
17.	परम्परागत पड़ोस और आधुनिक नगर (Traditionan Neighbourhood and Modern Cities)	149
18.	ग्रामीण जीवन पर नगरीय प्रभाव (Urban Influence on Rural Life)	157
	नगर और व्यवसाय : तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य (केस अध्ययन) (City and Trade : Comparative Perspective (Case Study)	
19.	औपचारिक क्षेत्र (Formal Sector)	168
20.	नगरीय अनौपचारिक क्षेत्र (Urban Formal Sector)	178
21.	परिवर्तनशील व्यावसायिक संरचना और आर्थिक उदारीकरण का प्रभाव (Changing Professional structure and Economic Liberalisation’s Effect)	188
	भारत में नगरीय मुद्दे (Urban Issues in India)	
22.	निर्धनता (Poverty)	195
23.	मलिन बस्तियाँ (Slums)	205
24.	पर्यावरण और आधारभूत संरचना (Environment and Basic Structure)	218
	नगरीय शासन (Urban Administration)	
25.	स्थानीय स्वशासन और स्वैच्छिक संगठनों का उद्‌भव (Local Self- Government and Rise of Voluntary Organisation)	234
26.	नगरीय नियोजन (Town or Urban Planning)	246
27.	जनसंचार माध्यम और शासन (Public Communication Media and Government)	256

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

नगरीय समाजशास्त्र

(Urban Sociology)

M.S.O.E.-4

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग में से कम-से-कम दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. नगरीय परिघटना के अध्ययन में पारिस्थितिकीय उपागम की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-33, प्रश्न 2

प्रश्न 2. नगरीय स्थानों (spaces) के रूप में नगरों के प्रकार्यों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-81, प्रश्न 1

प्रश्न 3. एक नगर की वृद्धि एवं संरचना के केन्द्रिक क्षेत्र सिद्धांत की आलोचनात्मक विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-41, प्रश्न 2

प्रश्न 4. भारत में नगरीय वृद्धि के पैटर्नों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-90, प्रश्न 2 तथा अध्याय-15, पृष्ठ-132, प्रश्न 2

प्रश्न 5. 'नगरीय समाज में मलिन बस्तियां एक भूमिका अदा करती हैं।' चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-23, पृष्ठ-211, प्रश्न 5

भाग-II

प्रश्न 6. नगरीय भारत में व्यवसायिक संरचना पर आर्थिक उदारीकरण के प्रभाव की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-21, पृष्ठ-191, प्रश्न 2, प्रश्न 3 तथा पृष्ठ-192, प्रश्न 4

प्रश्न 7. भारत में नगरीय निर्धरता की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर–भारत में गरीबी की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. व्यापक प्रसार

उच्च गरीबी दर–आर्थिक विकास के बावजूद, भारत की आबादी का एक बड़ा हिस्सा अभी भी गरीबी रेखा से नीचे रहता है।

ग्रामीण बनाम शहरी गरीबी–शहरी केंद्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी अधिक प्रचलित है, हालांकि शहरी गरीबी भी एक बढ़ती हुई चिंता है।

2. बहुआयामी प्रकृति

आय गरीबी–बड़ी संख्या में लोग राष्ट्रीय गरीबी रेखा या अंतर्राष्ट्रीय मानक $1.90 प्रति दिन से कम पर जीवनयापन करते हैं।

बुनियादी सेवाओं तक पहुँच का अभाव–कई गरीब परिवारों में स्वच्छ पेयजल, स्वच्छता, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा तक पहुँच का अभाव है।

कुपोषण और भूख–गरीब आबादी का एक बड़ा हिस्सा कुपोषण से पीड़ित है, खासकर बच्चे।

3. सामाजिक असमानता

जाति और लिंग असमानताएँ–गरीबी निचली जातियों (अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति) और महिलाओं को असमान रूप से प्रभावित करती है, जो गहरी जड़ें जमा चुकी सामाजिक असमानताओं को दर्शाती है।

क्षेत्रीय असमानताएँ–कुछ राज्यों, विशेष रूप से भारत के उत्तरी और पूर्वी क्षेत्रों में, दूसरों की तुलना में गरीबी दर अधिक है।

4. रोजगार के मुद्दे

बेरोजगारी और अल्प-रोजगार–उच्च स्तर की बेरोजगारी और अल्प-रोजगारी गरीबी में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। कई लोग अनौपचारिक क्षेत्र में कम वेतन वाली, असुरक्षित नौकरियों में लगे हुए हैं।

कृषि संकट–ग्रामीण गरीबों का एक बड़ा हिस्सा कृषि पर निर्भर है, जो अक्सर कम उत्पादकता, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे और खराब बाजार पहुँच का विषय है।

झटके के प्रति संवेदनशीलता

आर्थिक झटके–गरीब लोग आर्थिक मंदी, मुद्रास्फीति और नौकरी छूटने के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं।

स्वास्थ्य संकट–बीमारी या चोट, जेब से अधिक स्वास्थ्य देखभाल खर्च के कारण परिवारों को गरीबी में धकेल सकती है।

प्राकृतिक आपदाएँ–गरीब प्राकृतिक आपदाओं से अत्यधिक प्रभावित होते हैं, जिससे उनकी अल्प संपत्ति नष्ट हो सकती है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

6. सरकारी पहल और चुनौतियाँ

गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम–सरकार ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा), सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) और प्रधान मंत्री आवास योजना (पीएमएवाई) जैसे विभिन्न कार्यक्रम लागू किए हैं।

कार्यान्वयन में चुनौतियाँ–इन प्रयासों के बावजूद, भ्रष्टाचार, अक्षमता और बहिष्करण त्रुटियाँ जैसे मुद्दे इन कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को सीमित करते हैं।

7. दीर्घकालिक और अंतरपीढ़ीगत गरीबी

गरीबी का जाल–शिक्षा, कौशल और अवसरों की कमी के कारण कई परिवार पीढ़ी दर पीढ़ी गरीबी में रहते हैं।

कर्ज और बंधुआ मजदूरी–कुछ समुदाय कर्ज और बंधुआ मजदूरी के चक्र में फंसे हुए हैं, जिससे पीढ़ियों तक गरीबी बनी रहती है।

8. वैश्वीकरण का प्रभाव

आर्थिक अवसर–वैश्वीकरण ने आर्थिक विकास के लिए कुछ अवसर प्रदान किए हैं, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में।

हाशिए पर जाना–हालांकि वैश्वीकरण ने कुछ समूहों को हाशिए पर धकेल दिया है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ पारंपरिक आजीविका खतरे में है।

पिछले कुछ वर्षों में, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य, स्वच्छता, अपशिष्ट प्रबंधन और कौशल प्रशिक्षण जैसी बुनियादी सेवाओं में पर्याप्त निवेश की कमी के कारण इसके परिणाम सामने आए हैं।

इसे भी देखें–संदर्भ–देखें–अध्याय-22, पृष्ठ-200, प्रश्न 5 तथा अध्याय-22, पृष्ठ-201, प्रश्न 6

प्रश्न 8. नगरीय योजना से आप क्या समझते हैं? इसके प्रमुख सरोकारों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-26, पृष्ठ-248, प्रश्न 1, पृष्ठ-253, प्रश्न 3

प्रश्न 9. पूर्व औद्योगिक नगर क्या है? इसकी प्रमुख विशेषताओं को उजागर कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-74, प्रश्न 3

प्रश्न 10. भारत में नगरीय वृद्धि के पैटर्नों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-90, प्रश्न 2 तथा अध्याय-15, पृष्ठ-132, प्रश्न 2

■■

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

नगरीय समाजशास्त्र
(URBAN SOCIOLOGY)

अवधारणाएँ (Concepts)

नगरीय समाजशास्त्र क्या है?
(What is Urban Sociology?)

1

परिचय

अर्बन (Urban) तथा अर्बेन (Urbane) शब्दों की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द अर्बन्स (Urbans) से हुई है, जिसका अर्थ है नगर का रहने वाला। नगरों का अभ्युदय लगभग दस हजार वर्ष पूर्व हुआ था। नगरीय समाजशास्त्र पर प्रथम पुस्तक इटलीवासी जिमोवान्नी बोटेरो ने लिखी थी। इसका नाम था 'डेले कॉज डेल्ला ग्रण्डेजा डेल्ला सिट्टा'। यह 1598 में छपी थी। नगरीय समाजशास्त्र इन विद्वानों का (रैवेन्स्टीन, मेयर, सूपान, बुस्शर, विलकॉक्स तथा हर्ड) ऋणी है। भारत में सर्वप्रथम 1920 में बम्बई विश्वविद्यालय में प्रोफेसर सैडिक बैट्रिक द्वारा समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की गई थी।

एरिक्सन के अनुसार नगरीय समाजशास्त्र का व्यावहारिक लक्ष्य नगर में विद्यमान सामाजिक व्यवहार के विविध रूपों के निर्धारकों व परिणामों की खोज करना है।

समुदाय वह सबसे छोटा भू-नगरीय समूह है, जो सामाजिक जीवन के समस्त पक्षों को ग्रहण कर सकता है।

पारिस्थितिकी वह विज्ञान है, जो सजीव पदार्थों तथा पर्यावरण के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करता है।

नगरीय समाजशास्त्र की प्रकृति जटिल है। अतः इसके अध्ययन के अनेक उपागम हैं।

प्राथमिक समूह आमने-सामने के समूह हैं, जैसे–परिवार, दम्पती अथवा घनिष्ठ मित्र समूह। स्वैच्छिक संस्थाएँ सामाजिक संगठन के मध्य या मध्यवर्ती क्रम में हैं।

प्रस्तुत अध्याय में इनका अध्ययन किया गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

***(i)* उद्गम और विकास** (Origin and Development)– नगर का समाजशास्त्र अपेक्षाकृत नवीन है। नगर के समन्वय में प्रथम पुस्तक की रचना इटली निवासी **जिओबान्नी बोटेरो** ने की थी। 'डेले काज डेल्ला ग्रण्डेजा डेल्ला सिट्टा' (Della cause della grandegga della citta) नामक इस पुस्तक का प्रकाशन 1598 में हुआ था। तत्पश्चात ग्राण्ट, रैवेन्स्टीन, मेयर, सूपान, बुस्शर, एडेन वेबर, विलकॉक्स तथा हर्ड ने कतिपय आधारभूत समस्याओं की विवेचना की। समाजशास्त्री रेने मारियर ने सर्वप्रथम नगर पर एक मोनोग्राफ तैयार किया, जो सन् 1910 में प्रकाशित हुआ। तीन प्रारम्भिक समाजशास्त्रीय कृतियाँ निम्न प्रकार प्रकाशित हुईं–

(i) जी. सिम्मेल की 'डाई ग्रॉसटाटे एण्ड डास जीस्टेस्लेबेन', 1903 (G. Simmel's 'Die crosstadte and das Geistesleben) अर्थात, 'A Metropolis and Mental Life'.)

(ii) मैक्स बेवर का 'टाई स्टाट' अर्थात द सिटी (The City), 1921

(iii) आर. मारियर की 'ले विलेज एट ला विले' (R. Maurier's Le Village et la ville), 1929।

राउण्ट्री (Rountree) ने 1901 में 'पावर्टी : ए स्टडी ऑफ टाउन लाइफ' (Poverty : A Study. of Town Life) तथा 'ए स्टडी ऑफ डेस्टीट्यूशन इन यॉर्क इंगलैण्ड' (A Destitution in York England) लिखा था। वास्तविक प्रेरणा राबर्ट ई. पार्क से प्राप्त हुई थी। उनका निबन्ध, 'द सिटी' प्रथम बार 1915 में

www.neerajbooks.com

अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी में प्रकाशित हुआ था। अमेरिका में नगरीय समाजशास्त्र को 1925 में मान्यता मिली। उस वर्ष 'अमेरिकन' सोशियोलॉजिकल सोसाइटी' की एक वार्षिक बैठक में नगरीय समाजशास्त्र पर निबन्ध प्रस्तुत किये गये, जिन्हें ई. डब्ल्यू बर्गेस ने 'द अर्बन कम्यूनिटी' शीर्षक से प्रकाशित किया।

भारत में सर्वप्रथम 1920 के बम्बई विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पैट्रिक गेडेस ने समाजशास्त्र विभाग स्थापित किया। 1918 में उन्होंने 'टाउन प्लानिंग टुवर्ड्स सिटी डवलपमेंट फॉर इन्दौर' के दो खण्डों का प्रकाशन किया।

***(ii)* विषयवस्तु और क्षेत्र** (Subject-matter and Scope)–एरिक्सन का मत है कि नगरीय समाजशास्त्र विज्ञान है। इसका व्यावहारिक उद्देश्य नगर में पाये जाने वाले सामाजिक व्यवहार के विविध रूपों के निर्धारकों व परिणामों की खोज करना है। डॉ. विबासि के अनुसार नगरीय समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों, सामाजिक संस्थाओं तथा जीवन-यापन के नगरीय साधनों से उत्पन्न तथा उन पर आधारित सभ्यताओं के प्रकारों पर नगरीय जीवन के प्रभाव का अध्ययन करता है।

नगरीय समाजशास्त्र समस्त समाजशास्त्रीय अध्ययनों में सर्वाधिक विस्तृत व ग्रहणशील है। इसे निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट किया जा सकता है–

1. इसकी भूगोल में अतिव्याप्ति है। कारण यह है कि यह नगर के अन्दर सामाजिक संस्थाओं तथा सामाजिक समूहों के मौलिक वितरण पर बल देता है।
2. इसकी राजनीतिशास्त्र में अतिव्याप्ति है। कारण, यह राजनीतिक व्यवहार, सत्ता तथा निर्णय लेने की प्रक्रिया को महत्त्व देता है।
3. इसकी अर्थशास्त्र में अतिव्याप्ति है क्योंकि लोकनीति, कराधान व लोकव्यय इसका परिप्रेक्ष्य है।
4. इसकी मानव विज्ञान में अतिव्याप्ति है क्योंकि यह समूहों की संस्कृति का अध्ययन करता है।
5. अनेक दृष्टिकोणों से नगरीय समाजशास्त्र में विशेषज्ञों की रुचि कस्बा तथा नगर योजनाकारों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, शिक्षा, नस्लीय सम्बन्धों, आवासन तथा नगरीय विकास व पुनर्वास के क्षेत्र के विभिन्न मानव विशेषज्ञों से परस्पर व्याप्त है।

समुदाय (Community)–कभी-कभी समुदाय शब्द को साधारण आवास में अथवा एक ही क्षेत्र में निवास कर रहे समस्त व्यक्तियों की समष्टि के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। डेविस ने समुदाय की परिभाषा करते हुए कहा कि यह सबसे छोटे भूभागीय समूह, जो सामाजिक जीवन के समस्त पक्षों को ग्रहण कर सकता है। यह सबसे छोटा सामाजिक स्थानीय समूह है, जो सम्पूर्ण समाज हो सकता है और बहुधा है।

मैकाइवर तथा पेज के अनुसार समुदाय की आधारभूत कसौटी यह है कि किसी व्यक्ति के समस्त सामाजिक सम्बन्ध इसके अन्दर पाये जाते हैं।

पारिस्थितिकी (Ecology)–पारिस्थितिकी वह विज्ञान है, जो सजीव पदार्थों तथा पर्यावरण के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करता है। आवास मानव जीवन के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में अपना प्रभाव प्रकट करता है। सामान्य पारिस्थितिकी के जनक पार्क ने सर्वप्रथम इस शब्द का प्रयोग किया। कुछ विचारकों ने वनस्पति तथा मानव पारिस्थितिकी के मध्य निकट समानता को स्पष्ट किया है। हॉवली ने मानव पारिस्थितिकी को विज्ञान माना है, जो समुदाय के विकास तथा संगठन का अध्ययन करता है।

जिस्ट (Gist) तथा **हॉलबर्ट** (Halbert) ने इसे नगर में कर्मियों तथा संस्थाओं के भौगोलिक वितरण तथा वितरण के प्रतिफल की संरचना में सम्मिलित प्रक्रियाओं का अध्ययन कहा है।

नगरीय समाजशास्त्र के अध्ययन के उपागम (Approaches the Study of Urban Sociology)–नगरीय समाजशास्त्र की प्रकृति जटिल है। इसे विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने की आवश्यकता है। इसका दोहरा कार्य है–

(i) नगर की अर्थपूर्ण पहचान करना।

(ii) आधुनिक नगरीय जीवन का उद्गम उसके पूर्ववर्तों तक खोजना।

गेडेस ने नगर को सभ्यता के प्रतिबिम्ब के रूप में देखा है। मम्फोर्ड तथा घुर्ये ने विभिन्न ऐतिहासिक सन्दर्भों से इस विचार की व्याख्या की है।

पूर्व अनुकूलन शक्ति के रूप में भौतिक तंत्र पर विचार करना आवश्यक है। यह नगरवाद की पारिस्थितिकी है, जो कि नगर से सम्बन्धित है। यह पारिस्थितिकीय आयाम एक अनिवार्य उपागम है जो नगरीय जीवन के उन मौलिक, भौगोलिक व स्थूल पक्षों, जो सामाजिक-मानसिक स्वरूप की आकांक्षा, सहमति व सुविचारित क्रिया से भिन्न है, को सम्मिलित करता है।

भारतीय नगरों के मामले में, नगरों के आन्तरिक भाग को मोहल्ला अथवा परंपरा, जिसमें अनन्य रूप से किसी विशेष पेशे से सम्बद्ध या जाति समूह के लोग निवास करते थे, में विभक्त किया जा सकता है।

तत्पश्चात सामाजिक संगठन के स्वरूप का अध्ययन किया जाता है। यह परिप्रेक्ष्य नगरीय जीवन के आधारभूत स्वरूपों, जिनका विकास नगरीकरण का प्रत्यक्ष परिणाम है, से सम्बन्धित है। एक विधा के रूप में समाजशास्त्र ने नगरीकरण की प्रक्रिया के इस आयाम में सर्वाधिक योगदान किया है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

व्यक्तिगत (Individual)–नगरीय व्यक्तियों का सर्वोत्तम वर्णन व्यक्तित्व संघटन व व्यक्तिगत जीवन शैलियों के पैटर्न की दृष्टि से किया जा सकता है। नगरीय व्यक्तित्व व जीवन शैली पर आधुनिक निबन्धों में नगरीय जटिलता का सामना करने तथा इसके साथ समायोजन करने के तंत्र या नगरीय उत्तरजीविता की तकनीकों का वर्णन है।

प्राथमिक समूह (Primary Groups)–प्राथमिक समूह छोटे व घनिष्ठ और आमने-सामने के समूह हैं; उदाहरणार्थ, परिवार, दम्पती या घनिष्ठ मित्रता समूह। ये समूह नगरीय सामाजिक संगठन के जीवन क्रम के अंग रहे हैं। केवल आधुनिक नगरीय दशाओं के प्रत्युत्तर में उनके स्वरूप व कार्य परिवर्तित हो गये हैं। ये परिवर्तन समकालीन नगरीय समाजशास्त्रीय शोध के केन्द्रबिन्दु हैं।

स्वैच्छिक संस्थाएँ (Voluntary Institutions)–स्वैच्छिक संस्थायें भी सामाजिक संगठन के मध्य अथवा मध्यवर्ती क्रम में हैं। ये सहायक तथा सूचक दोनों कृत्य निभाते हैं जो कि सामाजिक संगठन के किसी भी अन्य स्तर के द्वारा पर्याप्त रूप से नहीं किया जाता।

नौकरशाही (Bureaucracy)–लाक्षणिक रूप से नौकरशाही संगठनों में श्रम के पदसोपानात्मक विभाजन में संगठित विशेषीकृत भूमिकाओं या पदों का विस्तृत संजाल सम्मिलित है। नौकरशाही के संगठन सामान्य रूप से नियमों के लिखित निकाय से बँधे होते हैं।

सामाजिक संस्थान (Social Institutions)–ये नगरीय समुदाय के अन्दर सामाजिक संगठन के सबसे बड़े व सर्वाधिक अमूर्त साधन हैं।

सामाजिक समस्या : परिप्रेक्ष्य (Social Problem : Perspective)–किसी न किसी प्रकार से प्रायः समस्त समकालीन सामाजिक समस्याएँ नगरीकरण की प्रक्रिया से सम्बद्ध रही हैं। अपराधों, निकृष्ट आवासन, निर्धनता, बेरोजगारी, मनोरोग, वर्ग-संघर्ष, नस्लीय व जातीय सघंर्ष, प्रदूषण आदि को नगरीय संकट शीर्षक में रखा गया है।

नगरीय समाजशास्त्र और अन्य समाज विज्ञान (Urban Sociology and Other Social Sciences)–नगरीय आधार का क्षेत्र बहुविध शोध के अधीन रहा है, जिसमें इतिहास, जनसांख्यिकी व सामाजिक मानव विज्ञान तथा समाजशास्त्र के साथ-साथ उपर्युक्त समस्त विधायें सम्मिलित हैं।

स्वपरख अभ्यास-प्रश्न

प्रश्न 1. नगरीय शब्द से क्या तात्पर्य है?

(What is understood by the term Urban?)

उत्तर–नगरीय : अर्थ (Urban : Meaning)–अर्बन (Urban) और अर्बेन (Urbane) शब्दों की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द 'अर्बेन' (Urbane) से हुई थी। इसका अर्थ है 'नगर का रहने वाला'। अर्बन (Urban) की व्युत्पत्ति प्राचीन फ्रांसीसी शब्द अर्बन (Urban) से हुई। इसके उच्चारण में फ्रांसीसी परम्परानुसार अधिक जोर था। कालान्तर में, फ्रांसीसी अर्बनस (Urbanus) लैटिन शब्द अर्बेन (Urbane) से लिया गया था। "अर्बन" (Urban) का तात्पर्य है विशेषीकृत, सभ्य, विनम्र या सुरुचिपूर्ण। इसका कारण यह था कि इन वांछनीय गुणों को ग्रामीण जन की अपेक्षा नगरीय (अर्बन) की चारित्रिक विशेषताएँ माना जाता था। नगरीय से अभिप्राय नगर अथवा कस्बा है। यह गाँव या देहात से विपरीत है। गाँव का निवासी देहाती कहलाता है। इसके विपरीत नगर का निवासी नगरीय कहलाता है।

प्रश्न 2. नगरों के उद्गम और विकास का वर्णन करिये।

(Describe the origin and development of cities.)

उत्तर–नगर : उद्गम व विकास (Cities : Origin and Development)–नगरों का अभ्युदय लगभग दस हजार वर्ष पूर्व हुआ था, तथापि नगर में वैज्ञानिकों ने लगभग सौ वर्ष पूर्व ही रुचि लेना प्रारम्भ किया था।

नगरीय समाजशास्त्र का विज्ञान इसके भी पश्चात प्रारम्भ हुआ। नगर के सम्बन्ध में प्रथम पुस्तक की रचना संभवतया जिओवान्नी बोटेरो (Giovanni Botero) ने की थी जो इटली का निवासी था। 'डेले कॉज डेल्ला ग्रण्डेजा डेल्ला सिट्टा' (Delle Cause della grandezza della citta) नामक पुस्तक 1598 में छपी थी। इसका अंग्रेजी संस्करण 'ए ट्रीटीज कन्सर्निंग' द कॉजेज ऑफ द मैग्नीफिसेन्स ऑफ सिटीज एण्ड ग्रेटनेस ऑफ सिटीज (A Treatise Concerning the Causes of the Magnificence of and Greatness of Cities) नाम से 1806 में प्रकाशित हुआ था। तथापि अब इस पुस्तक का महत्त्व केवल वैज्ञानिक जिज्ञासा मात्र रह गया है। यह नहीं कहा जा सकता कि इसने एक नवीन विज्ञान को जन्म दिया। नगर वैज्ञानिक विवेचना और शोध का विषय सत्रहवीं शताब्दी में ही बना है।

कालान्तर में निम्नलिखित ने विपुल साहित्य का सृजन किया–

(i) राजनीतिक अंकगणित के संस्थापक,
(ii) उनके उत्तराधिकारी,
(iii) सांख्यिकीविद,
(iv) जनसंख्या समस्याओं के क्षेत्र,
(v) अर्थशास्त्री,
(vi) इतिहासकार,
(vii) प्रबन्धक,
(viii) वास्तुकार योजनाकार,
(ix) समाज-सुधारक।

निम्नलिखित ने कतिपय आधारभूत बुनियादी समस्याओं की विवेचना की–

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(i) ग्राण्ट (Grant)
(ii) रैवेन्सटीन (Raveenstein)
(iii) मेयर (Mayr)
(iv) सूपान (Supan)
(v) बुस्शर (Buecher)
(vi) एडन वेबर (Adna Weber)
(vii) विलकॉक्स (Willcox) और
(viii) हर्ड (Hurd)

विज्ञान की नई शाखा के रूप में समाजशास्त्र की स्थापना के बाद भी इसके विद्यार्थियों ने नगरीय प्रघटना पर ध्यान नहीं दिया।

सर्वप्रथम, समाजशास्त्री रेने मॉरियर (Rene Maurier) ने नगर पर एक 'मोनोग्राफ' 'L'Originet la fonction economique des villes) पर लिखा, यह 1910 में प्रकाशित हुआ। उन्होंने मुख्यत: एक अर्थशास्त्री की दृष्टि से इस विषय की विवेचना की।

तीन प्रारम्भिक समाजशास्त्रीय कृतियाँ

(i) जी. सिम्मेल की 'डाई ग्रॉसटाटे अण्ड डास जीस्टेस्लेबेन (G.Simmel's Die Grosstandte und das Geistesleben) अर्थात ए मेट्रोपॉलिस एण्ड मेंटल लाइफ (A Metropolis and Mental Life), 1903
(ii) मैक्स वेबर की 'दाइ स्टाट' अर्थात् 'द सिटी' (The City), 1921 और
(iii) आर. मॉरियर की 'ले विलेज एट ला विले' (R. Maurier Le Village et la ville), 1929

उपरोक्त कृतियाँ वास्तव में बृहत् कृतियों का एक अंश मात्र थीं। हॉसरमैन (Hausserman) और हालिया (Halia), 2005 का मत है कि "यह कहना उचित है कि जॉर्ज सिम्मेल पहले वैज्ञानिक थे, जिन्हें नगरीय समाजशास्त्री कहा जा सकता है।"

उन्होंने 'नगरीय' (Urban) शब्द की समाजशास्त्रीय परिभाषा प्रस्तुत की तथा निम्नलिखित के मध्य अंतर्क्रिया का विश्लेषण किया था–

(i) स्थानिक घनत्व,
(ii) सामाजिक व्यवहार तथा
(iii) आर्थिक विभेदीकरण।

जेन आदम (Jane Addam) की 'हल हाउस मैप्स एण्ड पेपर्स' (Hull House Maps and Papers), 1893 और रॉबर्ट वुड (Robrt Wood) की 'द सिटी वाइल्डरनेस (The City Wilderness), 1899 नामक अन्वेषणात्मक अध्ययन बाद में किए गए अध्ययनों के आधार बने।

(i) 1888 में चार्ल्स बूथ ने लंदन में जीवन और श्रमिकों का अध्ययन किया।
(ii) 1908 में रिज एडिथ ऐबॉट और सोफोनिस्बा में शिकागो में आवासन का अध्ययन किया।
(iii) राउन्ट्री (Rowntree) ने 1901 में 'पॉवर्टी : ए स्टडी ऑफ टाउन लाइफ' (Poverty: A Study of Town Life) और 'ए स्टडी ऑफ डेस्टीट्युशन इन यॉर्क इंग्लैण्ड (A Study of Destitution in York England) लिखा। दोनों अध्ययनों में नगरीय जीवन के सम्बन्ध में सटीक सामान्य प्रतिपादन किये गये।

नगर और नगरीय प्रघटना (Town and Town Incident)– नगर और नगरीय प्रघटना सदैव मोहक रही हैं। यह उतनी ही प्राचीन है जितना कि स्वयं नगर का अभ्युदय है। यह ग्रामीण जन की बुद्धिमत्ता के अतिरिक्त अधिकांश सभ्यताओं के अधिक जटिल सामाजिक और राजनीतिक अनुमानों में दिखाई पड़ता है। नगर निम्नलिखित कारणों से आकर्षक रहा है–

(i) विशिष्टतायें,
(ii) अपनी क्षमतायें,
(iii) दुर्बलतायें,
(iv) देहात से भिन्नता।

यह अध्ययन पूर्वाग्रह युक्त था। नगर का नैतिक मूल्यांकन अलग-अलग सभ्यताओं में अलग-अलग था, जैसे

(i) यहूदी (Jewish),
(ii) यूनानी (Hellenistic),
(iii) रोमन (Roman),
(vi) ईसाई (Christian),
(v) भारतीय (Indian),
(vi) चीनी (Chineese) और
(vii) इस्लामी (Islamic) सभ्यताओं में।

इन सभी संस्कृतियों में आदर्श नगर के किसी नियम की खोज की गई, जो नगरीय जीवन के नकारात्मक पदों की प्रतिपूर्ति करता हो।

नगरीय जीवन के अध्ययन की वास्तविक प्रेरण। रॉबर्ट ई. पार्क से मिली। उनका निबंध 'द सिटी' 1915 में अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी' में प्रकाशित हुआ था। यह आने वाले नए युग का सूचक था। पर उस समय इसकी ओर कम लोगों का ध्यान गया। समाजशास्त्र अधिक विशेषज्ञता युक्त होकर सामान्य विज्ञान था। यह मान्यता प्राप्त करने के लिए संघर्षरत था। यह अर्थात मान्यता इसे धीरे-धीरे मिल रही थी। संयुक्त राज्य अमेरिका में नगरीय समाजशास्त्र को 1925 में उस समय मान्यता प्राप्त हुई जब 'अमेरिकन सोशियोलॉजिकल सोसाइटी' की एक वार्षिक बैठक नगरीय समाजशास्त्र को समर्पित की गयी।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com